प्रश्न:- सत्ता क्या है? इसके स्रोतों तथा सीमाओं का वर्णन करें।

उत्तर:- सत्ता को राजव्यवस्था रूपी शरीर का आत्मा कहा गया है। वह विभिन्न राजनीतिक प्रक्रियाओं जैसे- शक्ति, प्रभाव, नेतृत्व आदि का मूल उपकरण है। उसी के माध्यम से समन्वय, विनिश्चय, निर्माण, पदक्रम, अनुशासन, प्रयोजन आदि प्रक्रियाएं संभव होती हैं। औपचारिक एवं अनौपचारिक दोनों ही प्रकार के संगठनों में सत्ता का महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त होता है। और राजनीतिक जीवन में सत्ता की अवहेलना नहीं की जा सकती। कोई व्यक्ति या व्यक्ति समूह बगैर औपचारिक सत्ता के विशेष परिस्थिति में सत्ता धारण किए रह सकता है। लोकतंत्र में अधीनस्थों अर्थात जनता के द्वारा स्वीकृत किया जाना महत्वपूर्ण होता है। राजव्यवस्थाओं एवम् राजनीति में सत्ता की मात्रा को बढ़ाना आवश्यक तथा महत्वपूर्ण होता है। राजनीतिक लक्ष्यों की प्राप्ति इसी से संभव होती है।

Meaning of Authority:- अन्तर्राष्ट्रीय समाजविज्ञानों के ज्ञान कोष के अनुसार सत्ता को कई प्रकार से परिभाषित किया जा सकता है। (i) किसी कार्यालय अथवा व्यक्ति की सम्पदा के रूप में (ii) कार्यालयों के वरिष्ठ व अधीनस्थ अधिकारियों के बीच संबंधों के रूप में संचार का वह गुण जिसके आधार पर उसे स्वीकार किया जाता है। अपने सभी रूपों में सत्ता शक्ति, प्रभाव एवं नेतृत्व से जुड़ी हुई है। बायर्सटेड के अनुसार, "सत्ता शक्ति के प्रयोग का संस्थात्मक अधिकार है, वह स्वयं शक्ति नहीं है। बीच (Beach) - "दूसरे के कार्य निष्पादन को प्रभावित या निर्देशित करने के औचित्यपूर्ण अधिकार को सत्ता कहते हैं।" शेबे के शब्दों में, "([illegible] व्यक्ति एवं व्यक्तियों के समूहों को हमारे राजनीतिक निश्चयों के निर्धारण तथा राजनीतिक व्यवहार को प्रभा[illegible]रने का अधिकार है। UNESCO के एक Report के अनुसार सत्ता वह शक्ति है जो स्वीकृत, सम्मानित, ज्ञात एवं औचित्यपूर्ण हो।

Nature of Authority:- सत्ता की प्रकृति के सम्बन्ध में मुख्य रूप से दो विचारों का प्रतिपादन किया गया है ये दोनों ही सिद्धांत Prof. Beach द्वारा प्रतिपादित किये गये हैं, जो निम्न हैं:-

(a) औपचारिक सत्ता सिद्धांत- इस सिद्धांत के अनुसार सत्ता को आदेश देने का अधिकार माना जाता है और सत्ता का प्रवाह ऊपर से नीचे की ओर चलता है। यह अधिकार व्यवस्थाओं एवम् संगठनों में विशिष्ट एवं वरिष्ठ अधिकारियों को दिया जाता है और इससे आदेश सत्ता का एक पदक्रम बन जाता है।

सत्ता के पीछे व्यवस्था या संगठन की औचित्यपूर्ण शक्ति होती है। इस शक्ति के कारण इसे स्वीकार किया जाता है मैकाइवर ने इसे 'शान का जादू' कहा है। एक व्यक्ति जो आदेश देता हो, वह भले ही अपने अधीनस्थों से अधिक बुद्धिमान न हो, अधिक योग्य न हो और किसी भी दृष्टि से अपने सामान्य साथियों से श्रेष्ठ न हो, कभी-कभी तो उनका स्तर इन सबसे नीचा भी हो सकता है लेकिन वह सत्ता की स्थिति में होने के कारण आदेश अथवा निर्देश देता है और उसके आदेशों का पालन किया जाता है।

(b) स्वीकृति सिद्धांत:- व्यवहारवादी या मानवसंबंधवादी औपचारिक सत्ता सिद्धांत में विश्वास न रखते हुए 'स्वीकृति सिद्धांत' का प्रतिपादन करता है। इन यथार्थवादी अध्ययनकर्ताओं के अनुसार सत्ता कानूनी रूप से केवल औपचारिक होती है किन्तु वास्तव में सत्ता या आदेश के अधिकार की सफलता अधीनस्थों की स्वीकृति पर निर्भर करती है। जब अधीनस्थ अपनी समझ और योग्यता के दायरे में आदेशों को स्वीकार कर लेते हैं तो यह स्थिति 'सत्ता स्थिति' बन जाती है। Bernard ने अपनी रचना 'The Functions of the executive' में अधीनस्थ आदेशों को स्वीकार करें इसके लिए चार शर्तें बताई हैं- (a) अधीनस्थ अधिकारी आदेश अथवा सूचना को समझता हो या समझ सकता हो (b) अपने निश्चय करने के समय उसका यह विश्वास हो कि आदेश संगठन के उद्देश्यों के साथ असंगत नहीं है (c) निर्णय लेने के समय में वह यह सोचता हो कि एक

Scanned with CamScanner

समग्रता के रूप में सम्बंधित आदेश उसके व्यक्तिगत हितों के अनुकूल है (ब) वह मानसिक और शारीरिक दृष्टि से उस आदेश की अनुपालन करने की क्षमता रखता है।

Sources of Authority :- सत्ता की अवधारणा की विवेचना सुकरात, प्लेटो और अरस्तू आदि के समय से होती रही है किन्तु इसकी विस्तृत विश्लेषण 20 वीं सदी के राजनीतिक और समाजशास्त्रीय विश्लेषक मैक्सवेबर द्वारा प्रस्तुत की गयी है। उसके अनुसार अपने स्रोत के आधार पर सत्ता तीन प्रकार की होती है.

परम्परागत (Traditional):- जब प्रजा या अधीनस्थ परिवार अधिकारियों के आदेशों को इस आधार पर स्वीकार करते हैं कि ऐसा हमेशा से होता आ रहा है तो यह परम्परागत सत्ता कहलाती है। इस प्रकार की सत्ता में प्रत्यायोजन, तदर्थ एवं स्वेच्छाचारी होता है। अधीनस्थ सेवक समझे जाते हैं और वे आज्ञापालन परम्पराओं के प्रतीक विशेष व्यक्ति के वरण करते हैं। जैसे 'राजतन्त्र में राजा'।

वैधानिक नौकरशाही सत्ता (Legal Bureaucratic Authority):- जब अधीनस्थ किसी नियम को इस आधार पर स्वीकार करते हैं कि वह नियम उन उच्चस्तरीय अमूर्त नियमों के साथ सम्मत है, जिसे वे औचित्य-पूर्ण समझते हैं, तब इसे वैधानिक नौकरशाही सत्ता कह लेते हैं। यह आधुनिक नौकरशाही को अपने विशुद्ध रूप में प्रकट करता है। इसमें सत्ता का प्रत्यायोजन बौद्धिक आधार पर किया जाता है और कर्मचारीगण वैधानिक रूप से स्थापित निर्वैयक्तिक आदेशों के आधार पर आज्ञापालन करते हैं।

करिश्माई सत्ता (Charismatic Authority):- जब अधीनस्थ करिश्माई सत्ताधारी के आदेशों को इस आधार पर न्यायसंगत मानते हैं कि उनपर सत्ताधारी का व्यक्तित्व प्रभाव है, तब इसे करिश्माई सत्ता कहते हैं। इस सत्ता स्थिति में प्रायः कोई प्रत्यायोजन नहीं होता और अधीनस्थ अथवा कर्मचारी सत्ताधारी के व्यक्तिगत सेवक के रूप में आचरण करते हैं। अधीनस्थ अनुयायी होते हैं और अपने प्रिय नेता के करिश्माती एवं आदर्शवादी व्यक्तित्व के कारण उसके आदेशों का पालन करते हैं। मैक्सवेबर इसे ही- औचित्यपूर्ण सत्ता का दर्जा देता है।

Limitations of Authority :-

सत्ता की अवधारणा में शक्ति के मनमाने ढंग के प्रयोग को स्वीकार नहीं किया जाता है। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु सत्ता पर निम्नलिखित प्रतिबंध होते हैं ताकि सत्ता का मनमाना प्रयोग न हो —

(i) सत्ता पर आंतरिक तथा वाह्य प्रतिबंध होते हैं जो सत्ता को मनमानी करने से रोकता है।
(ii) सत्ता पर प्राकृतिक प्रतिबंध होते हैं.
(iii) सत्ता पर उद्देश्यगत प्रक्रिया सम्बंधी प्रतिबंध होते हैं।
(iv) सत्ता पर संस्कृति, परम्पराओं, रूढ़ियों तथा नैतिक धारणाओं का प्रतिबंध होता है।
(v) सत्ता पर संवैधानिक कानूनों तथा नियमों का प्रतिबंध होता है।
(vi) सत्ता पर राजनैतिक पर्यावरण का प्रभाव पड़ता है।
(vii) सत्ता का संचालन आर्थिक तकनीकी तथा भौतिक पर्यावरण में होता है।
(viii) कर्मचारियों की भूमिकें भी सत्ता को प्रतिबंधित करती हैं।

Functions of Authority :- सत्ता का कार्य असीमित है, क्योंकि उसे विभिन्न उद्देश्यों के लिए अनेकानेक व्यवस्थाओं में अगणित परिस्थितियों में कार्य करना होता है। सत्ता ही समन्वय, निरीक्षण, प्रत्यायोजन, अनुशासन आदि के लिए जिम्मेवार होती है। व्यवस्थाओं में प्रतिमान,

Scanned with CamScanner

संचारण, लक्ष्य प्राप्ति आदि कार्य सत्ता के द्वारा ही किये जाते हैं। सत्ता उपर्युक्त कार्य निरन्तर विनिश्चय निर्माण प्रक्रियाओं द्वारा करती है। यही कारण है कि हरबर्ट साइमन ने विनिश्चय निर्माण पर अत्यधिक जोर दिया है। सत्ताधारी अपना कार्य स्वयं या अन्य अधीनस्थ उत्तराधिकारियों के सहयोग से करता है। इसके लिए विभिन्न संचार-साधनों, क्रियाविधियों आदि का प्रयोग किया जाता है।

Authority and Power :- राजनैतिक संगठन उन संरचनाओं द्वारा निर्मित होते हैं जो कि बल प्रयोग का नियमन करती हैं। वे सामाजिक सहयोग और नेतृत्व से सम्बन्धित होती हैं। इसमें शक्ति और सत्ता का महत्वपूर्ण स्थान होता है। शक्ति व्यक्तियों, समूहों तथा भौतिक परिस्थितियों के प्रतिरोध के होते हुए भी स्वतंत्र कार्य करने की क्षमता का नाम है। सत्ता आदेश देने की क्षमता का नाम है। शक्ति को अपनी इच्छा को प्रभावशाली ढंग से पूर्ण करने की योग्यता के रूप में देखा जा सकता है और यदि आवश्यकता पड़े तो दूसरों पर थोपा जा सकता है। इतिहास में अनेकानेक ऐसे उदाहरण भरे पड़े हैं, जिसमें दूसरे राज्यों का अनाधिकार ग्रहण किया अथवा उन पर विजय प्राप्त की गयी, परंतु बाद में धीरे-धीरे जन स्वीकृति प्राप्त हो गया और वे सत्ता बन गये। सत्ता के बिना शक्ति असंस्थागत, असाम्यनात्मक तथा अनिश्चित होती है।

Authority and Influence :- सत्ता प्रभाव की तरह दूसरों के व्यवहार में परिवर्तन लाने वाली प्रक्रिया का नाम है। जब कोई व्यक्ति विभिन्न प्रकार की सूचनाओं को प्रा... है और उनके आधार पर स्वेच्छापूर्वक अपने निर्णय पर पहुँचता है तथा ऐसा निर्णय प्रभावक व्यक्तित्व, मूल्यों एवं नेतृत्व आदि की कुशलताओं के कारण, उसके व्यवहार को परिवर्तित कर देता है, तो उसे प्रभाव कहा जाता है। जिस व्यक्ति पर प्रभाव डाला जाता है वह सम्मति एवं सुझाव दे सकता है, विचार-विमर्श में भाग ले सकता है तथा अनुनय विनय कर सकता है। ऐसा प्रभावित व्यक्ति अथवा प्रभावक सत्ताधारी नहीं कहलाता। सत्ता औपचारिक, निश्चित एवं विशिष्ट होती है। सत्ता का अनुपालन बगैर किसी तर्क-वितर्क या विचार-विमर्श के आदेशों का पालन करता है। वह सत्ताधारी विनिश्चय को अपना विनिश्चय बना देता है। सत्ता की सार्थकता शक्ति, प्रभाव, नेतृत्व आदि के स... प्रकट होती है। जबकि प्रभाव अधिक भावात्मक शक्तिशाली एवं दृढ़ होता है।

Authority and Legitimacy :- सत्ता ऐसे व्यक्तियों तथा व्यक्ति समूहों से सम्बन्धित होती है जिन्हें राजनैतिक एवं प्रशासनिक विनिश्चय लेने तथा व्यवहार को प्रभावित करने का अधिकार होता है। यह अधिकार इसलिए नहीं दिया जाता कि प्राधिकारियों से उद्गमित होते हैं। यह ही 'औचित्यपूर्ण' कहा जाता है। सत्ता की सफलता अधिकतम औचित्यपूर्णता पर निर्भर करती है। औचित्यपूर्णता के अभाव में सत्ता प्रभावहीन हो जाती है और अन्ततः इसे बल-प्रयोग या शक्तियों का सहारा लेना पड़ता है। इससे राजनैतिक प्रभाव की मात्रा कम हो जाती है और आज्ञापालन की राजनैतिक कीमत बढ़ जाती है।

Dr. Akhlakh Ahmad
(Assistant professor)
Dept. of Pol. Sc.
D.K. College, Dumraon